संसदीय क्षेत्र कोटा के ग्राम बोरदी में वीर गुर्जर समाज के सामूहिक विवाह सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

———

वीर गुर्जर समाज के सामूहिकता सम्मेलन में पधारे सभी समाज के भाइयो एवं बहनो।

मैं इस विशाल विवाह सम्मेलन के लिए आयोजक देवीलाल जी गुर्जर, पूर्व सरपंच सोदान सिंह जी और पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई देता हूं, जिन्होंने इस गाँव के अंदर ग्यारहवां सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया है।

वीर गुर्जर समाज स्वाभिमानी और देशभक्त समाज है। इस समाज ने आजादी की लड़ाई लड़ी। आजादी के बाद भी आज हमारे देश की सीमाओं पर हमारे नौजवान सैनिक भाई सेना में अर्धसैनिक बल में देश की रक्षा और सुरक्षा करने का काम कर रहे हैं।

गुर्जर समाज की वजह से ही जो जंगल बचे हुए हैं, उन जंगलों को बचाने में और प्रकृति से प्रेम करने में, चूंकि आज पृथ्वी दिवस है और पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में गाँव के अंदर प्रकृति का संरक्षण करना, गाँव का संरक्षण करना, गौमाता की पूजा करना और एक समाज सेवा के रूप में सुदूर जंगल में रहकर लोगों को दूघ बेचकर उनकी सेवा करने का काम गुर्जर समाज ने किया है।

यदि आप गुर्जर समाज के इतिहास को देखेंगे तो आप देखेंगे कि देवनारायण भगवान जी ने गुर्जर समाज को एक संस्कार, आध्यात्मिक ज्ञान, दिशा और शूर-वीरता का एक संस्कार दिया है। साढू माता के बारे में आप सभी जानते हैं। हमारे पास पन्ना धाय से लेकर कई उदाहरण हैं। इस समाज की बलिदान की गौरवशाली परम्परा और एक गौरवशाली इतिहास रहा है। इसीलिए, आज भी समाज की सेवा करने में गुर्जर समाज कृतसंकल्प होकर काम कर रहा है।

गुर्जर समाज ने अपने समाज में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन करने के लिए भी एक अच्छी शुरुआत की है। इस सामूहिक विवाह सम्मेलन के माध्यम से हम एक छत के नीचे इकट्ठे हैं। आज गुर्जर समाज के कोटा, बूंदी में मिलाकर कम से कम 25 सम्मेलन हुए होंगे। यह हर गाँव और ढाणी के अंदर होते हैं। अगर समाज के अंदर सामाजिक परिवर्तन लाना है और सामाजिक चेतना लानी है तो हमें सामूहिक रूप से बैठना पड़ेगा। इस तरीके के सामूहिक सम्मेलन के माध्यम से पूरा समाज एक छत के नीचे आया है। आज यहां वर-वधू का परिणय संस्कार होने वाला है। मैं सभी वर-वधु को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

मैं विशेष रूप से उनके माता-पिता को शुभकामनाएं देता हूं, जिन्होंने अपने बेटे और बेटी का विवाह सामूहिक विवाह सम्मेलन में करने का निर्णय किया है। हम सबको इस समाज में शिक्षा में अलख जगाना है। हम गाँव, ढाणी और दूर-दराज के जंगलों में बैठे हैं। हम हवाओं में रहने वाले लोग हैं, लेकिन आने वाला समय हमारा है। इसलिए, हर गाँव में रहने वाला दूर-दराज का व्यक्ति अपने बेटे और बेटी को अच्छी और उच्चतम शिक्षा दे, यह संकल्प हमें लेना है।

जिस समाज या देश में शिक्षा का उजाला पहुंचा है, उस समाज और देश में आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन हुआ है। अगर हमें समाज में आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन करना है, नये युग की शुरुआत करनी है तो आज यह भी हमारा संकल्प होना चाहिए कि हम अपने बेटे-बेटी को उच्चतम शिक्षा दें, जिससे देश और प्रदेश में हमारा नौजवान नेतृत्व करे, यह भी हमारा संकल्प होना चाहिए।

आप सभी को इस शुभ अवसर की बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई। मुझे सतवंत साहब का निमंत्रण आया तो मैंने दिल्ली में तय किया था कि निश्चित रूप से मैं आपके सम्मेलन में आऊंगा। पहले मैं आ नहीं आ पाया था, लेकिन इस बार आपके सम्मेलन में जरूर आऊंगा। आपका प्यार, स्नेह, आशीर्वाद इसी तरीके से मिलता रहता है। मैं आपकी सेवा के लिए हमेशा तैयार हूं। कोटा से दिल्ली तक किसी भी तरह का काम हो, मैं आपके लिए हमेशा तैयार हूं। आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई।

———